विद्यापति

विद्यापति मैथिलीक सभसँ बेसी लोकप्रिय रचनाकार छथि। हिनक जन्म 1350 ई. मे भेल छल। लगभग नब्बे वर्षक आयुमे हिनक मृत्यु भेलनि। ई मधुबनी जिलाक बिस्फी गामक वासी छलाह।

विद्यापति मिथिलाक ओइनवार बंशक विभिन्न राजा सभक समयमे राजदरबारसँ विद्वान रूपमे सम्बद्ध रहलाह। मुदा, हिनक ख्याति अछि राजा शिवसिंहक सखा तथा परामर्शीक रूपमे।

विद्यापति तीन भाषामे रचना कयने छथि - संस्कृत, अवहट्ट, मैथिली। संस्कृतमे हिनक लगभग एक दर्जन पोथी उपलब्ध अछि। एहिमे भूपरिक्रमण, विभागसागर, पुरुषपरीक्षा, दानवाक्यावली, दुर्गाभक्ति-तरंगिणी, मणिमञ्जरी, लिखनावली आदि प्रसिद्ध कृति अछि।

अवहट्टमे हिनक दूटा पोथी अछि - कीर्त्तिलता तथा कीर्त्तिपताका। मैथिलीमे विद्यापति केवल गीत लिखलनि। मैथिलीकेँ ई देसिल बयना कहने छथि। विद्यापति मिथिलाक देशी भाषामे गीत लिखलनि ई, एकटा क्रान्तिकारी काज छल। कारण, ओहि समयमे साहित्य संस्कृत अथवा प्राकृतमे लिखल जाइत रहय। तखन अवहट्टमे लेखन प्रारम्भ भेल आ तकरा बाद विद्यापति मिथिलाक देशी भाषा, मैथिलीमे गीत लिखलनि।

मैथिलीमे विद्यापति लगभग एक हजार गीत लिखने छथि। हिनक गीत मुख्यत: राधा-कृष्ण आ गौरी -महादेवसँ सम्बद्ध अछि। राधा-कृष्ण विषयक गीत नारी आ पुरुषक प्रेम-भावकेँ दिव्य रूपेँ प्रदर्शित करैत अछि। विद्यापतिक शिव-गीतमे महेशवानी पार्वती आ महादेवक वैवाहिक जीवनक गीतकेँ कहल जाइत अछि, किन्तु नचारी महादेवक प्रति भक्ति -भावसँ प्रेरित अछि। मिथिलामे विद्यापतिक शिव-गीत राधा-कृष्ण विषयक गीत जकाँ, किछु अंशमे ओहिसँ अधिके, लोकप्रिय अछि।

काव्य सन्दर्भ : संकलित शिव-गीत मोहन भारद्वाज द्वारा सम्पादित 'विद्यापतिक शिवगीत' नामक पुस्तकसँ लेल गेल अछि। ई विद्यापतिक महेशवानी थिक । एहिमे पार्वती शिवकेँ सम्बोधित करैत छथि- हम अहाँकेँ बेर-बेर कहैत छी जे मोन लगा कऽ खेती करू। लाज छोड़ि कय अहाँ भीख मँगैत फिरैत छी, एहिसँ अहाँक गुण-गौरव पर प्रभाव पड़ैत अछि। सभ लोक निर्धन कहि कऽ अहाँक उपहास करैत अछि, किओ अहाँकेँ नीक दृष्टिसँ नहि देखैत अछि। यैह कारण अछि जे अहाँक पूजा आक ओ धातूर लऽ होइत अछि विष्णुक पूजा चम्पाक फूलसँ। तेँ हम कहैत छी जे अहाँ खटङ काटि कऽ हर बनाउ, त्रिशुल तोड़ि कऽ फार बनाउ आ बसहा लऽ खेत जोतू। गंगाक पानिसँ पटौनी करू। अहाँक सेवा हम एहने पुरुषक रूपमे करैत रहलहुँ अछि। मुदा अहाँ तँ भिखारि भऽ जीवन-यापन करैत छी। एहि जन्ममे जे भेल से भेल, अगिलो जन्म नीक हो सैह कामना अछि।

शिवगीत

बेरि बेरि अरे सिव
मोजे तोहि बोलगो
किरिसि करिअ मन लाए।
बिनु सरमे रहिअ
भिखिए पए माङिगअ
गुन गउरव दुर जाए।।
निरधन जन बोलि
सबे उपहासए
नहि आदर अनुकम्पा ।
तोहेँ सिव पाओल
आक धुथुर फुल
हरि पाओल फुल चम्पा ।।
खटङ काटि हर
हर बन्धाबिअ
तिसुल तोड़िअ करु फारे।
बसह धुरन्धर
लए हर जोतिअ
पाटिअ सुरसरि धारे ।।
भनइ विद्यापति
सुनह महेश्वर
ई जानि कएल तुअ सेवा।
एतए जे बरु होअ
से बरु होअओ
ओतए सरन मोहि देबा।।

शब्दार्थ

बेरि - बेरि	:	बेर-बेर, बारंबार
मोत्रे	:	हम
बोलओ	:	बजैत छी
तोहि	:	तोरा
किरिसि	:	खेती, कृषि
सरमे	:	लाज कयने
उपहासए	:	निन्दा करय, हँसी करय
अनुकम्पा	:	कृपा
हर	:	शिव, महादेव, महेश्वर
हरि	:	विष्णु
आक	:	अकौन
धुथुर	:	एक फूल, धथूर
खटङ	:	काठक एक अस्त्र जे शिव धारण कयने छथि
तिसुल	:	त्रिशूल
ब्सह	:	बसहा, शिवक बड़द
फारे	:	हरमे पैसाओल धरगर लोहा
सुरसरि	:	गंगा

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न -

(i) 'शिवगीतक' कें रचयिता छथि-

(क) चन्दा झा (ख) विद्यापति

(ग) काशीकान्त मिश्र 'मधुप' (घ) वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'

(ii) 'विद्यापतिक' रचना छनि –

(क) शिवगीत (ख) समय साल

(ग) वन्दना (घ) हऽ आब भेल वर्षा

2. रिक्त स्थानक पूर्ति करू :

(i) बेरि – बेरि अरे ..... ।

(ii) नहि ..... अनुकम्पा ।

(iii) ई ..... कएल तुअ सेवा ।

3. निम्न पाँतीक सप्रसंग व्याख्या करू :

(i) निरधन जन बोलि
सबे उपहासए
नहि आदर अनुकम्पा।

(ii) खटङ काटि हर
हर बन्धाबिअ
तिसुल तोड़िअ करु फारे ।
बसह धुरन्धर
लए हर जोतिअ
पाटिअ सुरसरि धारे ।।

4. लघूत्तरीय प्रश्न-

(i) कवि शिवकेँ की करबाक लेल कहैत छथि ?

(ii) शिवक पूजा की लऽ होइत अछि ?

(iii) विष्णुक पूजा कोन फूलसँ होइत अछि ?

(iv) कवि शिवकेँ हर कोना बनयबाक लेल कहैत छथिन ?

(v) शिव खेतक पटौनी कोना करताह ?

Farm

5. दीर्घोत्तरीय प्रश्न -

(i) एहि गीतमे कवि शिवकेँ खेती करबाक लेल किएक कहैत छथिन ?

(ii) भीख माङबसँ खेती करब किएक नीक अछि ?

(iii) पठित गीत अहाँकेँ की सन्देश दैत अछि ?

(iv) पठित कविताक सारांश लिखू।

गतिविधि-

(i) विद्यापतिक शिवगीतमे महेशवानी
आ नचारी अबैत अछि।
दुनू प्रकारक एक-एक गीत कंठस्थ करू।

(ii) विद्यापतिसँ भिन्न कोनो कविक शिवगीत लिखू।

(iii) निम्नलिखित शब्दक दू-टा पर्यावाची शब्द लिखू :
निरधन, हर, हरि , फूल

(iv) एहि गीतसँ पाँच टा संज्ञा शब्द चुनि कऽ लिखू।

(v) निम्नलिखित शब्दक अर्थ लिखू।
हर, हरि, सुस्सार।

निर्देश-

1. शिक्षकसँ अपेक्षा कयल जाइत अछि जे ओ विद्यापतिक आन रचनासँ छात्रकेँ अवगत कराबथि।
2. शिक्षक छात्रसँ शिवगीतक गायन वर्गमे कराबथि।
3. शिवगीतक गायनकेँ छात्र द्वारा विद्यालयक समारोहमे गायन शिक्षक कराबथि।
4. विद्यापतिक भक्ति रचनासँ सेहो शिक्षक छात्रकेँ जनतब कराबथि।